निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

स्थापित वर्ष : 1990

अवध भारती संस्थान, हैदरगढ़

अवध ज्योति

वर्ष – 23 अक्टूबर–दिसम्बर 2016

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

अवधी जागरण यात्रा पर विशेष

अवध-ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष - 23 अक्टूबर-दिसम्बर 2016

संरक्षण
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
जगदीश पीयूष

सम्पादक
डॉ0 रामबहादुर मिश्र

उप सम्पादक
प्रदीप तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश 'जयन्त'

सह सम्पादक
विष्णु कुमार शर्मा
विश्वम्भरनाथ अवस्थी
सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर'

अक्षर संयोजन
मो. सलमान अंसारी

विधिक सलाहकार
एड. अनिल कुमार तिवारी

सहयोग
एक प्रति - रु. 25
वार्षिक - रू. 100

अवध ज्योति से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हैदरगढ़ होगा।

रामजोहारि – सम्पादकीय 2

चिट्ठी पत्री 3

लेख -

+ अवधी भाषा और साहित्य – रामाज्ञा द्विवेदी समीर 4
+ अवधी साहित्येतिहास लेखन की समस्यायें –प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित 7
+ अवधी भाषा कय लिपि – प्रो. वेद मित्र शुक्ल 11
+ अवधी जाति गीत – डॉ. विन्ध्यमणि त्रिपाठी 14
+ लोकोक्तियों मुहावरों में श्रम की महत्ता – प्रदीप तिवारी 17
+ अवधी भाषा और उसका समन्वित साहित्य – प्रो. बलजीत श्रीवास्तव 19
+ नेपाल मा अवधी साहित्य – छोटी चिनारी – प्रो. विष्णुराज आत्रेय 23
+ अवधी के आदि कवि गुरू गोरखनाथ –डॉ. राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव 27
+ ब्रज भूषण त्रिपाठी 'ब्रजेश' – रमेश मंगल बाजपेयी 28
+ अवधी के भगत बाबा बैजनाथ – पुष्पेन्द्र कुमार 29
+ अवधी संरक्षण में सरकारी गैर सरकारी संस्थाओं का योगदान 30
– डॉ. राम बहादुर मिश्र
+ अवधी का परम्परागत गाथा साहित्य – आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप' 41
+ अवधी का खजाना – सतनाम पंथ – डॉ. विनय दास 44
+ लोक नाट्य – ओम प्रकाश 'जयन्त' 46

कहानी -

+ ओझा काका – सचिन पाण्डेय 48
+ अवधी की पहली प्रकाशित कहानी–छोट के चोर–मोहिनी चमारिन 49
+ चार बात याद राखौ – कृष्ण कुमार यादव 52

कविता -

+अवधी वन्दना – वंशीधर शुक्ल 53
+अवधी जयगान – देवी प्रसाद तिवारी 'दीपक' 55
+ककहरा – प्रमोद कुमार 56
+अवधी संदेश – कुमार तरल 57
+कुसुम वर्मा के दो गीत 10
+अवधी गजल – आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' 56

नाप तौल -

+गोमा तीरे – (अवधी उपन्यास) 58
+श्री सीतायण – (कविता) 59

हाल चाल -

+अन्तर्राष्ट्रीय अवधी महोत्सव 60
+गोमा तीरे – लोकार्पण 60
+शिखर सम्मान 60
+अन्तराष्ट्रीय अवधी जागरण यात्रा – यात्रा दल सदस्य, पड़ाव स्थल, कार्यक्रम यात्रा दल के सदस्यों का परिचय। 61

सम्पादकीय पत्र व्यवहार - कार्यालय अवध भारती संस्थान - लोक कला मंच लोक सदन नरौली, बीजापुर (हैदरगढ़) बाराबंकी-225 124
लखनऊ कार्यालय : फ्लैट नं. जी-801, बेतवा अपार्टमेंट, सेक्टर-4, गोमती नगर विस्तार, निकट-डीपीएस लखनऊ-226 010
मो. 9450063632, **e-mail :** awadjyoti@gmail.com, salmanansari7@gmail.com

सम्पादकीय

अवध-ज्योति कै ई अंक 'अन्तर्राष्ट्रीय अवधी जनजागरण यात्रा पै केन्द्रित है। आज से दस साल पहिले यक विचार गोष्ठी मा यक बात पर सबकै बनी रहै कि अवधी का सम्मान देवावै खातिर ई बात कै जरूरति है कि अवधी भाषी लोगन का जागरूक कीन जाय। उनका अपनी बोली-बानी पर अभियान होय। गोष्ठी मा तमामन विद्वान रहे, जिहमा डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप (सीतापुर), डॉ. महेश अवस्थी (प्रयाग), डॉ. गणेश दत्त सारस्वत (सीतापुर), डॉ. शिवनारायण शुक्ल (गोण्डा), पं. राजबहादुर द्विवेदी (अयोध्या), डॉ. राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव (बहराइच), सत्यनारायण द्विवेदी 'श्रीश' (फैजाबाद), जगदीश पीयूष (अमेठी), आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप' (सुलतानपुर) इहमा तमाम लोग साकेतवासी होइ गये।

गोष्ठी मा ई विषय पर रूपरेखा बनावै खातिर हमका जिम्मेदारी सौंपी गई। पीयूष जी से सलाह औ मसविरा किहे के बाद तय कीन गवा कि इहके बरे अवधी जागरण यात्रा कै आयोजन कीन जाय। अवधी समाज अतना बड़ा है कि यक बार में घूमा जाब आसान नहीं औ फिर हमरे पास कौनौ संसाधन नहीं। अपनेन मरे सरग देखै वाली बात। हम सब तौ हड्डी से कबड्डी खेलै के आदी हन। विचार भवा कि यक यात्रा दल बनावा जाय औ सब लोग इहमा तन मन धन से सहयोग करै। यात्रा के चार चरण तय कीन गयें औ उनकै नाव धरा गवा- अयोध्या यात्रा, चित्रकूट यात्रा, प्रयाग यात्रा और नीमसार (नैमिषारण्य) यात्रा। ई चारौ स्थान पूरे भारत मा जग जाहिर है औ चारौ अवधी भाषा भाषी हैं। आध्यात्मिक और धार्मिक होय के नाते इनका जनमानस मा बड़ा महातम है। ई यात्रा बदे रूप रेखा बनिगै -

अयोध्या यात्रा कै योजना जायसी कै मजार से सुरू होय के जगदीशपुर, फैजाबाद, अयोध्या, गोण्डा, बलरामपुर, बहराइच होत भये नेपाल पहुंचे औ हुंआ से वापसी मा लखनऊ मा समापन होय।

प्रयाग यात्रा - अयोध्या से सुरू होइके अम्बेदकरनगर, सुलतानपुर, अमेठी, प्रतापगढ़ होत भयें प्रयाग पहुंचे। हुवां पर समापन होये।

चित्रकूट यात्रा - नेपाल से सुरू होइके अयोध्या, बाराबंकी, लखनऊ, लालगंज, रायबरेली, फतेहपुर होत भये चित्रकूट पहुंचे। चित्रकूट मा समापन होये।

नैमिष यात्रा - बस्ती से सुरू होइके बलरामपुर, गोण्डा, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर, सीतापुर होत भये नैमिषारण्य पहुंचे औ हुवैं पर इहकै समापन होये।

ई मोटा-मोटी यात्रा कै रूपरेखा बनी रहै। मुला यात्रा कै साइत नाहीं बनि पावत रही। आखिर मा सन् 2009 मा 24 दिसम्बर से यात्रा कै संयोग बनिगा। हम औ पीयूष जी जायसी की समाधि से यात्रा सुरू कीन। फैजाबाद मा विकल साकेती औ जमुना उपाध्याय सहयात्री बने आगे बलरामपुर मा डॉ. प्रकाश चन्द्र गिरि, बहराइच मा डॉ. अशोक गुलशन सथुवा बने। छः जने नेपालगंज पहुंचि के हुवां के अवधी प्रेमिन से चरचा परिचरचा कीन। नेपाल मा तौ अवधी का राष्ट्रीय भाषा कै दरजा मिला है। ई यात्रा से हम सबका बड़ा बल मिला। साहित्य जगत मा इहकै बड़ी चर्चा भै।

अब दुसरी (चित्रकूट) यात्रा कै संजोग सात साल बाद बनै जात है - एक अक्टूबर से आठ अक्टूबर 2016 तक। यह अवधी जागरण यात्रा नेपागंज से सुरू होइके 2 अक्टूबर का अयोध्या पहुंचे 3 अक्टूबर का बाराबंकी 4 अक्टूबर चित्रकूट 5 अक्टूबर प्रयाग 6 अक्टूबर सुलतानपुर अमेठी जायस होत भये रात मा लखनऊ पहुंचे। 7 अक्टूबर का लखनऊ मा यात्रा दल कै स्वागत-सम्मान भये के बाद वहीं दिन कपिलवस्तु (नेपाल) का रवाना होइ जाये। औ 8 अक्टूबर का भगवान बुद्ध की पावन भूमि कपिलवस्तु मा इहकै समापन होये। ई यात्रा मा भारत औ नेपाल के पचीस से तीस अवधी प्रेमी आपन सहभागिता करिहैं।

ई चारों जागरण यात्रा भारत मा होइहैं। यही बीच मा नेपाल देश के अवधी प्रेमी नेपाल के अवध ी भाषी भूभाग मा जागरण यात्रा निकारै कै मसबिा किहिन हैं। ई यात्रा नेपाल के मधेसी भूभाग मा नवल परासी, रूपन्देही, कपिलवस्तु, दांग, बांके, बर्दिया, कैलाली औ कंचनपुर जिला मां निकारी जाये। ई सब जिला अवधी भाषा भाषी क्षेत्र होयं। नेपाल मा सौ के आस-पास बोली भाषा हैं। जिहमा अवधी कै अठवां स्थान है।

जहाँतक अवध भाषा कै बात है तौ इहका महातम पूरी दुनिया मा है। पूरी दुनिया मा ई भाषा का बोलै औ समझै वालेन कै तादाद बीस करोड़ के आस-पास है। अवधी हिन्दी औ भारत के सबसे खास भाषा आय। ई पर जतनी बात होय क चाही अबै तक नाही भै। अवधी यक परम्परा बनाइस। वहिका जौन साहित्य जगत मा मान्यता मिलै क चही वइ अबै नहीं मिली। यक समय वहौ रहा जब यह राजकाज कै भाषा रही। यहिका कबौ हिन्दी कै उपभाषा माना जात रहा। अवधी कै आपन संस्कृति है जिहका बचाय के हम भारत कै संस्कृति बचाय सकित है । दुनिया की कौनउ संस्कृति कै अध्ययन अवधी संस्कृति के जरिया से कीन जाय सकत है। नीग्रो, निषाद, द्रविड़, किरात, मंगोल जइसन परवर्ती संस्कृति के सूत्र इहमा मिलत हैं। सबसे पहिले कोशल मा इहकै संस्कृति विकसित भै औ इहकै आविष्कारौ हियैं भवा। बाद मा और देसन ग्रीक, रोमन जइसन देसन मा इहकै विकास भवा।

यक जानकारी बताय के हम आपन बात खतम कीन चहित है कि दुनिया की हजारन भाषा मा अवध ी कै 29वां स्थान है। विश्व भाषा मा इहकै कोड स. 29 awa है।

अन्तर्राष्ट्रीय अवधी जनजागरण यात्रा के ई अंक मा कुछ नई जानकारी देय कै कोसिस कीन गइ है।

सब पंचन का रामजोहारि!

राम बहादुर मिसिर

● आदरणीय भैय्या डॉ. मिसिर जी,
सप्रेम राम-राम।

नेपाली अवधी विशेषांक - पढ़य के शुभअवसर मिला। हम धन्य होय गयन, ई अंक मा नेपाल साहित्य के साथय साथ नेपाल के रहन, सहन, खान-पान, शादी विवाह, जाति पांति, भाषा बोली लगायत नेपाल के बारे मा बहुत कुछ जानकारी मिली, अतनी जानकारी खोजयं के लिए अगर नेपाल भ्रमण किया ज तौ बरसौं बरस लाग जइ हैं, फिर भी अतनी जानकारी न मिलिहैं, धन्य के हैं मिसिर जी जो अवधी साहित्य मा अतना मेहनत करत हैं, और हां 'राम जोहारि' तो बहुतय नीक लाग, इमा जो आप असहिष्णुता और सहिष्णुता के बारे मा लिखा गवा है, तौ उ सोलह आने सच है, की भारत हमेशा सहिष्णु रहा है, जौन लोग असहिष्णुता के हल्ला मचावत हैं चाहे साहित्यकार होय चाहे नेता ई पक्के हराम खोर हैं, ई राजनीति द्वारा प्रायोजित कुत्ता हैं, ई पत्रिका मा कोनव कमी नाय है, बल्की नवसिखिया साहित्यकारन का आगे बढ़य मा बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

मिथिलेश कुमार जायसवाल, भज्जापुरवा, जिला-बहराइच। मो. 9532184793

● आदरणीय बन्धु डॉ0 मिसिर जी।
सप्रेम सिव-सुमिरन।

सुख्यात पत्रिका 'अवध ज्योति केर अप्रैल - जून 16 अंक मिला। बहुतै-नीक लाग। आपन परोसी देस नेपाल मइहां अवधी भाषा केर बहुतै महातम है। जेहिका पूरी तना उजागर करै ई अंक (नेपाल अवधी विशेषांक) सफल है। ऐतिहासिक जानकारी होय ते, यहु अंक पर्याप्त ग्यानबध ाक औरु संग्रह करै जोगु है। यू सब आप केर अवधी हेतु समरपन औ सेवा ते संभो हुइ सका है। हमारि हार्दिक बध ाई और असेष मंगलकामना।

सस्नेह आप केर अग्रज
डॉ. रमेश मंगल बाजपेयी